International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

देवनागरी लिपिः वैज्ञानिकता की कसौटी पर

डॉ. सुरेन्द्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी),
दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हिसार–125001, हरियाणा
e-mail: skkbishnoi@gmail.com

लिखित संकेत ही किसी लिपि के आधार होते हैं। किसी भाषा या विचारों को मूर्त रूप देने में लिपि का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ध्वनि तो तात्कालिक, नश्वर और वायवी होती है, लिपि ही उसे चिरस्थायी बनाती है। युग–युग का साहित्य लिपि के माध्यम से ही सुरक्षित रहता है और लिपि के माध्यम से हो हस्तान्तरित होता है। इन्हीं सब आवश्यकताओं के कारण ही लिपि का अविष्कार हुआ होगा। लिपि का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। चित्रलिपि से ध्वन्यात्मक लिपि तक की यात्रा लिपि ने तय की है। वर्तमान में विश्व की सभी भाषाओं की लिपियाँ हैं। उन सभी लिपियों के मध्य देवनागरी लिपि अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। देवनागरी का विकास ब्रह्मी लिपि से हुआ है। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो बायें से दायें लिखी जाती है। विश्व के उपलब्ध साहित्य में से प्राचीनतम वैदिक साहित्य में भी इसी लिपि का प्रयोग हुआ है जिससे इसकी प्राचीनता सिद्ध होती है।

देवनागरी विश्व की सम्पूर्ण लिपियों में सर्वाधिक वैज्ञानिक व संतुलित है। आज सूचना प्रौद्योगिकी व कम्प्युटर के युग में भी यह सिद्ध हो गया है कि देवनागरी ही सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। इसकी वैज्ञानिकता की परख करने से पहले इस लिपि के सामान्य गुण जानने आवश्यक है, जो इस प्रकार है–

1. एक ध्वनि : एक सांकेतिक चिह्न
2. एक सांकेतिक चिह्न : एक ध्वनि
3. स्वर व व्यंजन में तर्कसंगत व वैज्ञानिक कम विन्यास
4. वर्णों की पूर्णता
5. उच्चारण एवं लेखन में समानता
6. उच्चारण स्पष्टता
7. देवनागरी लिपि सर्वाधिक ध्वनि चिह्नों को व्यक्त करती है।
8. मात्राओं का प्रयोग
9. अर्ध अक्षर के रूप की सुगमता

देवनागरी की कुछ और महत्त्वपूर्ण विशेषताएं निम्नवत् है–

1) **लिपि चिह्नों के नाम ध्वनि के अनुसार–** इस लिपि में चिह्नों के द्योतक उसके ध्वनि के अनुसार ही होते हैं और इनका नाम भी उसी के अनुसार होता है। जैसे– अ, आ, ओ, औ, क, ख आदि। किंतु रोमन लिपि चिह्न में आई किसी भी ध्वनि का कार्य करती हैं, जैसे– भ् (अ) ब (क) ल् (य) आदि। इसका एक कारण यह हो सकता है कि रोमन लिपि वर्णात्मक है और देवनागरी ध्वन्यात्मक।

2) **लिपि चिह्नों की अधिकता–** विश्व के किसी भी लिपि में इतने लिपि प्रतीक नहीं है। अंग्रेजी में ध्वनियाँ 40 के ऊपर हैं किन्तु केवल 26 लिपि चिह्नों से काम होता है। उर्दू में भी ख, घ, छ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ आदि के लिए लिपि चिह्न नहीं है। इनको व्यक्त करने के लिए उर्दू में 'हे' से काम चलाते हैं। इस दृष्टि से ब्रह्मी से उत्पन्न होने वाली अन्य कई भारतीय भाषाओं में लिपियों की संख्याओं की कमी नहीं है। निष्कर्षतः लिपि चिह्नों की पर्याप्तता की दृष्टि से देवनागरी, रोमन और उर्दू से अधिक सम्पन्न हैं।

3) **स्वरों के लिए स्वतंत्र चिह्न–** देवनागरी में ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के लिए अलग–अलग चिह्न उपलब्ध हैं और रोमन में एक ही (T) अक्षर से 'अ' और 'आ' दो स्वरों को दिखाया जाता है। देवनागरी के स्वरों में अंतर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

4) **व्यंजनों की आक्षरिकता–** इस लिपि के हर व्यंजन के साथ–साथ एक स्वर 'अ' का योग रहता है। जैसे– च् + अ – च, इस तरह किसी भी लिपि के अक्षर को तोड़ना आक्षरिकता कहलाता है। इस लिपि का यह एक अवगुण भी है किन्तु स्थान कम घेरने की दृष्टि से यह विशेषता भी है, जैसे– देवनागरी लिपि में 'कमल' तीन वर्णों के संयोग से लिखा जाता है, जबकि रोमन में छह वर्णों का प्रयोग किया जाता है।

5) **सुपाठन एवं लेखन की दृष्टि–** किसी भी लिपि के लिए अत्यन्त आवश्यक गुण होता है कि उसे आसानी से पढ़ा और लिखा जा सके। इस दृष्टि से देवनागरी लिपि अधिक वैज्ञानिक है। उर्दू की तरह नहीं, जिसमें जूता को जोता, जौता आदि कई रूपों में पढ़ने की गलती अक्सर लोग करते हैं।

वैज्ञानिक लिपि की कसौटी– वैज्ञानिक लिपि की कसौटी के अनुसार किसी भी भाषा की लिपि के लिए मुख्यतः तीन बातें आवश्यक हैं–

(क) भाषा में जितनी उच्चारण– ध्वनियाँ हो, उन सबके लिए अलग–अलग लिपि चिह्न हो,

(ख) प्रत्येक लिपि चिह्न द्वारा केवल एक उच्चारण ध्वनि का बोध हो और

(ग) एक उच्चारण ध्वनि का बोध कराने वाला एक ही लिपि चिह्न होना चाहिए।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विश्व की अनेक प्रमुख लिपियों में ध्वनियों के नाम भिन्न हैं और उनके उच्चारणात्मक ध्वनिमूल्य भिन्न हैं। नागरी में दोनों में कोई अन्तर नहीं है। इसकी वर्णमाला का वर्णक्रम अत्यंत वैज्ञानिक है। ध्वनियों का वर्गीकरण भी बड़ा वैज्ञानिक है। आरम्भ में स्वर ध्वनियाँ– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः हैं।

तदनंतर स्थानानुसारी वर्गक्रम से 27 स्पर्श व्यंजन (कवर्ग– क् ख् ग् घ् ङ्, चवर्ग– च् छ् ज् झ् ङ्, टवर्ग– ट् ठ् ड् ढ (ढ़) णः, तवर्ग– त् थ् द् ध् न्, पवर्ग प् फ् ब् भ् म्) है। तत्पश्चात् अंतस्थ– (य् र् ल् व्), तदंनतर ऊष्म ध्वनियाँ– (श् ष् स्) और 'ह्' हैं।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से देवनागरी लिपि को अक्षरात्मक (सिलेबिक) लिपि कहते हैं। लिपि के विकास सोपानों की दृष्टि से चित्रात्मक, भावात्मक और भावचित्रात्मक लिपियों के अंतर 'अक्षरात्मक स्तर की लिपियों का विकास माना जाता है। पाश्चात्य और अनेक भारतीय भाषा विज्ञानविज्ञों के मत से लिपि की अक्षरात्मक अवस्था के बाद अल्फाबेटिक (वर्णात्मक) अवस्था का विकास हुआ। ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) लिपि, लिपि की सबसे विकसित अवस्था मानी गई है।

ग्रीक, रोमन आदि वर्णमालाएँ हैं। आज रोमन वर्णमाला को अनेक सांकेतिक चिह्नों (डायक्रिटिकल मार्क्स) और नवलिपि संकेतों के अनुयोग द्वारा सर्वभाषा लेखन के उद्देश्य से पूर्णतम बनाने की चेष्टा की गई/जाती है। उसमें विश्व की सभी भाषाओं को उनके शद्धोच्चारणनुसार लिखने की क्षमता बताई जाती है, फिर भी वहां भाषा की एक उच्चार्य ध्वनियों के लिए अनेक लिपि संकेतों का प्रयोग (यथा 'ख' के लिए) आवश्यक होता है।

उपरोक्त कसौटी के अनुसार देवनागरी की वर्तमान वर्णमाला में कुछ मामूली त्रुटियां हैं जिसकी चर्चा भी यहां आवश्यक है–

- कुछ स्वरों के लिपि चिह्नों का अभाव होने से एक–एक लिपि चिह्न द्वारा अनेक उच्चरण ध्वनियों का बोध कराया जाता है।
- र के कई रूप प्रयुक्त होते हैं : जैसे इन शब्दों में– राम, प्रथम, राष्ट्र, धर्म आदि।
- क्ष, त्र, ज्ञ, श्र आदि संयुक्ताक्षरों को वर्णमाला स हटाया जा सकता हैं क्योंकि अन्य संयुक्ताक्षरों के लिये स्वतंत्र प्रतीक नहीं है।
- ' ं ' की मात्रा से अनुस्वर के साथ–साथ पंचमाक्षरों का भी काम लिया जाता है। जैसे गड्गा के स्थान पर गंगा, चन्चल के स्थान पर चंचल, खण्डन के बजाय खंडन, पन्थ के जगह पर पंथ, कम्पन के स्थान पर कंपन आदि।

- कुछ संयुक्ताक्षरों को लिखने के कई रूप प्रचलित हैं। फिर भी इतना अवश्य कहा जा सकता है कि परंपरागत लिपियों की अपेक्षा देवनागरी लिपि अधिक पूर्ण और अधिक वैज्ञानिक है।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता के प्रमाण–

निम्नलिखित गुणों के कारण देवनागरी वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरी उतरती है–

- एक ध्वनि– एक सांकेतिक चिह्न
- एक सांकेतिक चिह्न – एक ध्वनि
- स्वर और व्यंजन में तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक क्रम–विन्यास देवनागरी के वर्णों का क्रम– विन्यास उनके उच्चारण के स्थान को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। इसके अतिरिक्त वर्ण–क्रम के निर्धारण में भाषा विज्ञान के कई अन्य पहलुओं का भी ध्यान रखा गया है।
- भारतीय भाषाओं के लिये वर्णों की पूर्णता एवं सम्पन्नता (52 वर्ण, न बहुत अधिक, न बहुत कम)
- उच्चारण और लेखन में एकरूपता
- हस्त लेखन और मुद्रण में एकरूपता (रोमन, अरबी और फारसी में हस्तलिखित और मुद्रित रूप अलग–अलग हैं)
- लिपि चिह्नों के नाम और ध्वनि में कोई अन्तर नहीं (जैसे रोमन में अक्षर का नाम 'बी' है और ध्वनि 'ब' है)
- अर्ध–अक्षर के रूप की सुगमता (खड़ी पाई को हटाकर– दायें से बाये कम में लिखकर तथा अर्द्ध अक्षर को ऊपर तथा उसके नीचे पूर्ण अक्षर को लिखकर– ऊपर नीचे कम में संयुक्ताक्षर बनाने की दो प्रकार की रीति प्रचलित हैं)
- देवनागरी, 'स्माल लैटर' और 'कैपिटल लैटर', 'प्रिन्ट रूप', 'कर्सिव रूप' आदि की अवैज्ञानिक व्यवस्था से मुक्त है।

लिपि की क्लिष्टता बहुत कुछ व्यक्ति एवं अभ्यास सापेक्ष होती है। अनभिज्ञ एवं अनभ्यस्त व्यक्ति को सरल लिपि भी क्लिष्ट प्रतीत होती है। प्रत्येक लिपि में कुछ तीव्र गतिशील और कुछ मन्द गतिशील लिखने वाले होते ही हैं। अतः लेखन की त्वरा भी लिपि से अधिक लिखने वाले की क्षमता पर निर्भर करती है। वर्णों की अधिकता तो संस्कृत में भी है। लेकिन यह संस्कृत का दोष नहीं, सम्पन्नता मानी जाती है। लिपि की वैज्ञानिकता की पहली शर्त है कि उसमें भाषा की प्रत्येक ध्वनि के लिए स्वतंत्र वर्ण हो। नागरी में शिरोरेखा का प्रयोग मात्रा अंलकरण के उद्देश्य से नहीं होता बल्कि उसके और भी उद्देश्य है। जैसे शिरोरेखा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

से ध, घ, भ, म आदि वर्णों की अलग पहचान स्थापित होती है। इससे प्रत्येक शब्द का अलग –अलग अस्तित्व बनता है जैसे महादेव शब्द को अलग–अलग शिरोरेखा में लिखा जाये तो अर्थ भी बदल जायेगा। अलग शिरोरेखा से 'महा' शब्द 'देव' शब्द का विशेषण बन जायेगा जबकि एक शिरोरेखा में 'महादेव' शब्द संज्ञा है।

नागरी में ट्ट, मूर्धन्य ष, आदि का सम्बन्ध वैदिक संस्कृत आदि प्राचीन भारतीय भाषाओं से है जिनमें इन वर्णों से संबंध ध्वनियां विद्यमान थी। अतः उन भाषाओं के सभी ग्रन्थों में इन ध्वनियों का प्रयोग मिलता है। अस्तु आधुनिक आर्य भाषाओं में भी इन ध्वनियों को हटाया नहीं जा सकता क्योंकि प्राचीन भारतीय भाषा और साहित्य आधुनिक भाषा एवं साहित्य का उपजीव्य है। यह कहा जाता है कि नागरी में ख, ध, म, भ आदि वर्णो में संदिग्धता बनी रहती है। जैसे ख से 'रव' का भ्रम होता है। लेकिन इस प्रकार का भ्रम तो रोमन में भी कैपिटल आई एवं स्माल एल, मए, बए, न, अ आदि वर्णों में होता है। अरबी–फारसी में भी इसी प्रकार के संदिग्ध वर्णों की अधिकता है। नागरी में शिरोरेखा के माध्यम से इन वर्णों की पृथक् पहचान भली प्रकार हो जाती है। यह सतत् अभ्यास और ध्वनि ज्ञान पर आधारित है।

क्ष, त्र, ज्ञ को भी संयुक्त व्यंजन की दृष्टि से अनावश्यक बताया जाता है। किन्तु संयुक्त व्यंजन होते हुए भी आवश्यक हैं, जैसे क्षत्रिय, लक्षण, पक्ष, त्रिशूल, त्रिदेव, ज्ञान, विज्ञ आदि। अतः इन ध्वनियों की ट्ट, झ, ण आदि ऐसे द्विविध वर्ण हैं जो भ्रम उत्पन्न करते हैं। ऐसा कहा जाता है। ऐसे द्विवविध् रूप तो रोमन लिपि में लगभग सभी वगो में पाए जाते हैं। जैसे (ए) (स्माल ए), बी (स्माल बी), (आर) (स्माल आर), (एफ) (स्माल एफ) आदि लेकिन नागरी का प्रयोग इसके उद्भव काल से ही एकाधिक भाषाओं के लिए अत्यंत विस्तृत क्षेत्र में होता रहा है। इसी के परिणामस्वरूप कुछ वर्णों में किंचित भिन्नता आ गई है, ऐसा होना स्वाभाविक है। इसलिए भारत सरकार ने एक–एक रूप को मानक मानकर उसका प्रयोग स्वीकार किया है।

अनुनासिकता संबंधी नियम भी नागरी में सुनिश्चित है। किन्तु सुविधा और प्रयोग की एकरूपता की दृष्टि से लेखन में कुछ भिन्नता आ गई है, लेकिन उसके उच्चारण, अर्थ आर व्यवहारिकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। जो जानकार हैं वे अनुनासिकता का शुद्ध प्रयोग करते ही हैं, जैसे हंसी, भैंस, हिंसा, निन्दा, पम्प आदि। अनुनासिकता के प्रयोग में कुछ अवैज्ञानिकता का प्रचलन हो गया किन्तु प्रयोग में आते–जाते जो रूप प्रचलित हो जाता है, वही भाषा का एक अंग बनकर अपना स्थान बना लेता है। यह भाषा के विकास का नियम भी है। फिर भी इस अवैज्ञानिकता को स्वीकार करने में संकोच नहीं होना चाहिए। यद्यपि इसका निराकरण संभव नहीं प्रतीत होता।

देवनागरी में 'र' के पांच रूप (प्रकार, कृतज्ञ, वर्ष, रकम, ड्रग) प्रचलित है। किन्तु ये पांचों रूप अलग–अलग अस्तित्व एवं प्रयोग में वर्तमान है। अतः हिन्दी भाषा का एक आवश्यक अंग बन गए हैं। इन्हें

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनावश्यक नहीं कहा जा सकता। नागरी पूर्णतः ध्वनि वैज्ञानिक है। इसमें ध्वनियों के उच्चारण क्रम के अनुसार ही वर्णों का संयोजन होता है– ध्वनियां जिस क्रम में उच्चारित होती हैं, उसी क्रम में लिखी जाती हैं। जैसे– खट्टा, गड्ढा, प्रेम, ऋण आदि। एक स्वर के साथ चार–चार व्यंजन तक संयुक्त होकर एक अक्षर बनाते हैं, जैसे– वर्त्स्य।

मात्राओं का विधान नागरी लिपि की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। इसी के कारण वह वर्णात्मक लिपियों से अधिक विकसित दशा की वैज्ञानिक लिपि बन सकी हैं। टंकण, मुद्रण आदि प्रावधिक उपयोगों में यदि मात्राओं के कारण कुछ कठिनाई होती भी है तो केवल इसलिए कि नागरी के उपयुक्त यंत्रों के निर्माण का अभी तक समुचित प्रयास नहीं किया गया। इसमें लिपि का कोई दोष नहीं। मात्रा चिह्न स्वतन्त्र वर्ण नहीं बल्कि स्वर वर्णों के ऐसे कल्पित चिह्न हैं जो व्यंजन वर्णों के साथ युक्त होकर उसमें अपने से सम्बद्ध की उपस्थिति की सूचना देते हैं। अतः मात्रा विधान अवैज्ञानिक नहीं है। नागरी लिपि में ध्वनि विश्लेषण की क्षमता भी प्रर्याप्त है, जैसे– 'चन्द्रिका' शब्द का ध्वनि विश्लेषण करें तो उसे च् + अ + न् + द् + र् + इ + क + आ के रूप में समझा जा सकता है।

संसार में ऐसी कोई लिपि नहीं है जिसमें लिखते समय हाथ न उठाना पड़ता हो। रोमन में जे.टी. आदि वर्णों को लिखने में बिंदु लगाने, टी काटने आदि के लिए हाथ उठाना पड़ता है। अतः नागरी पर यह आरोप निराधार है। यह किसी भी लिपि में संभव नहीं है कि उसमें संसार की सभी भाषाओं की ध्वनियों के लिए वर्ण हो। फिर भी सबसे अधिक वर्ण देवनागरी में ही है। देवनागरी में जितना एक वर्ण के स्थान में लिखा जाता है, उतने के लिए रोमन में कभी–कभी सात वर्णों का स्थान लगता है। जैसे अंग्रेजी में 'थ्रू' व 'नॉलेज' आदि लिखने में अधिक समय, स्थान व श्रम लगता है। देवनागरी में ऐसा नहीं है। अस्तु आइजक पिटमैन और मोनियर विलियम्स जैसे विश्व के अधिकांश विद्वानों की यही मान्यता है कि 'संसार की कोई लिपि यदि सर्वाधिक पूर्ण है तो वह एकमात्र देवनागरी ही है'।